SHRIMATI URMILABEN CHIMANBHAI PATEL: The same type of problem is there in Ahmedabad and there is the epidemic of jaundice. That is why I just mentioned that.

Need for releasing more L.P.G. connections to Gujarat

SHRI GOPALSINH G. SOLANKI (Gujarat): Sir, only in the morning we had experienced the problem of waiting list of telephone connections faced by Telecommunications Department. Now I am drawing the attention of the Government to the injustice which is being done to the State Gujarat in releasing LPG connections. It is decreasing day by day. In 1986, one lakh seventy-seven thousand LPG connections were released as against the demand of one lakh and eighty-seven thousand connections. In 1988, while the demand was two lakh and ten thousand. the number of connections released was one lakh and twenty-seven thousand. In 1991 the demand was fifty-four thousand and seven hundred and the number of connections released was only forty thousand. In 1992-93, forty thousand and seven hundred and forty-two connections were released as against the demand of fifty thousand. In 1993, only thirteen thousand four hundred and ten connections were released as against the demand of forty-two thousand. There was some increase in 1988-89, 1989-90 and 1990-91 and that was only three thousand connections per year. The overall waiting list in Gujarat till September, 1993, is 6,48,673, out of which 3,84,000 are there for more than two years. Therefore, I would like to request the Government to release LPG connections at the rate of 2,50,000 per year so that they can minimise the list.

Underutilisation of crude oil refining capacity at Barauni

श्री एस. एस. अहलुवालिया (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं इस विशेष उल्लेख के माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं बरौनी ऑयल रिफाइनरी के बारे में। बरौनी ऑयल रिफाइनरी जो कि 3.3 मिलियन टन क्रूड आयल को प्रोसेस करने के लिए बनी थी और बिहार के पिछड़े जिले में लगाई गई थी, लेकिन जब से आसाम में आंदोलन शुरू हुआ तब तक सक क्रूड ऑयल की जो कमी देखी गई और सप्लाई में कमी आई और अब खासकर जब से नूमालघर रिफाइनरी बनाने का निर्णय आसाम सरकार ने लिया है केन्द्र सरकार के समर्थन से वहां रिफाइनरी बन रही है, उसके बाद बरौनी रिफाइनरी को क्रूड ऑयल मिलेगा या नहीं, यह एक बड़ा प्रश्न-चिह् है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, इससे पहले ही वहां पर दिन पर दिन पेट्रोलियम विभाग से और पट्रोयिम मिनिस्ट्री द्वारा प्रोडक्शन कम किया जाता रहा है। 1989-90 में वहां पर प्रोडक्शन 28 मिलियन टनकर दिया गया। उस के बाद 1991-92 में वह 2.4 मिलियन टन कर दिया गया जिस के कारण वहां का उत्पादन तो कम हो ही रहा है, वहां के कर्मचारियों के दिलोदिमाग में एक प्रश्न-चिह्न है कि शायद यह कारखाना ज्यादा दिन नहीं चलेगा और बंद हो जाएगा। ऐसे प्रश्न के जवाब में पेट्रोलियम मिनिस्ट्री ने यह निर्णय लिया था कि हल्दिया से क्रूड ऑयल पाइप लाइन लगाई जाए बरौनी तक और हल्दिया पोर्ट से क्रूड ऑयल लाया जाए और यहां पर उस क्रूड ऑयल को लाकर प्रोसेस किया जाए और पूरी क्षमता में इसका यूटिलाइजेशन किया जाए।

महोदय, इस के साथ-साथ एक और सर्वे किया गया था कि बरौनी ऑयल रिफाइनरी में थोड़ा सा पैसा और लगाने

पर इस की थोडी सी कैपेसिटी और बढ़ाई जा सकती है और लेड-फ्री पेट्रोल का उत्पादन किया जा सकता है जो पेट्रोल के कंजप्शन को कम करेगा और गाड़ियों के इंजिन खराब होने से रोकेगा। लेनकि पता नहीं यह मामला कहां पर अटक गया है। मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि एक तरफ हम ओमा और ईराक से क्रूड ऑयल और गैस पाइप लाइन बिछाने के लिए 4.5 बिलियन डालर खर्चा कर रहे हैं हमारे यहां 566 किलोमीटर पाइप लाइन बिछाने के लिए सिर्फ 624 करोड़ रुपए की जरूरत है। पर दुर्भाग्य की बात है कि उसकी फिजिबिलिटी रिपोर्ट तैयार करने के लिए जो 5 करोड़ रुपए चाहिए वहीं उपलब्ध नहीं कराए जा रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, यह सिर्फ वहां के कर्मचारियों का सवाल नहीं है, पर उस क्षेत्र की प्रगति का भी सवाल है, उस क्षेत्र के विकास का प्रश्न है। पूरे बिहार में एक पेट्रोलियम रिफाइनरी है और वह भी बंद होने की कगार पर है। मेरी आपके माध्यम से मांग है कि सरकार का ध्यान इस तरफ आकर्षित करें और हल्दिया से बरौनी तक क्रूड ऑयल लाने की जो पाइप लाइन बिछाने का निर्णय है वह जल्दी से जल्दी ले क्योंकि आज भी निर्णय ले लिया जाता है तो इस लाइन को बिछाने में कम से कम चार वर्ष लगेंगे। तो मैं समझता हूं और आप भी जानते हैं कि उस इलाके के विकास के लिए इस रिफाइनरी का होना कितना जरूरी है क्योंकि इसके साथ साथ जुड़ा हुआ हिन्दुस्तान फर्टिलाइजर का प्लांट है जो नेफ्था बेस्ट है जो वहां थर्मल पावर स्टेशन है वह भी वहां के फर्नेस ऑयल से चलता है। इस के बंद होने से तीनों कारखाने बंद होने की संभावना है। इस के साथ ही उस इलाके का विकास रूकेगा यह आप समझ सकते हैं।

अतः मैं सरकार से मांग करता हूं कि तुरन्त हल्दिया से बरौनी तक की क्रूड ऑयल की पाइपलाइन बिछाने की कोशिश की जाए।

श्री रंजन प्रसाद यादव (बिहार): महोदय, मैं इस विशेष उल्लेख का समर्थन करता हूं और इससे अपने को संबद्धकरता हूं।

श्री अहमद मोहम्मद भाई पटल (गुजरात): उपसभाध्यक्ष महोदय, अहमदाबाद में तेजी से हो रहे वायु प्रदूषण के बारे में मैं आपके माध्यम से सदन का और सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अहमदाबाद में प्रत्येक पांच यातायात पुलिस कर्मचारियों में से चार को कैंसर होने का भारी खतरा है। प्रत्येक पांच पुलिस कर्मचारियों में से तीन श्वास की बीमारी से पीड़ित हैं। प्रत्येक यातायात चौराहे पर वायु प्रदूषण प्रतिघन मीटर 2 हजार माइक्रोग्राम निर्धारित सीमा की तुलना में 2 से 7 गुणा अधिक बताया गया है जिससे स्थानीय यातायात पुलिस को चौराहों पर मजबूरन वायु प्रदूषण नकाब पहनना पड़ता है। कार्बन मानोक्साइड भी प्रतिघन मीटर दो हजार माइक्रोग्राम निर्धारित सीमा से 3 से 4 गुणा अधिक बताया गया है। नाइट्रोजन आक्साइड भी प्रतिघन मीटर 80 माइक्रोग्राम की सामान्य मात्रा से 2 से 7 गुणा अधिक बताया गया है। रिपोर्ट के अनुसार अहमदाबाद के लगभग 25 प्रतिशत नागरिकों के प्रदूषण के रोग से पीड़ित होने की आशा है।

एक सर्वेक्षण से पता चला है कि 5 में से दो पुलिसकर्मी आंख तथा चमड़ी की बीमारियों से पीड़ित रहते हैं। अगर फौरन ही उनको रोकने के लिए इलाज नहीं किया गया तो यह रोग गम्भीर रूप ले सकता है। अहमदाबाद की सड़कों पर प्रतिघन ध्वनि प्रदूषण के रूप में एक और बड़ी समस्या पैदा हो गई है। गाड़ियों से लगभग 1850 मीट्रिक टन प्रदूषण फैलने का अनुमान है। प्रदूषण परीक्षणों से यह पता चलेगा

[श्री अहमद मोहम्मद भाई पटेल]

कि शहर की कम से कम 60 से 70 परसेंट गाड़ियां इस परीक्षण में कामयाब नहीं हो पायेगी। उपभोक्ता शिक्षा अनुसंधान केन्द्र द्वारा किये गये सर्वेक्षण से यह नतीजा निकला है कि शहर की सड़कों पर चलने वाली 50 परसेंट से अधिक गाड़ियां प्रदूषण के लिए दोषी हैं। केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान के एक दस्तावेज में यह बताया गय है कि जो लोग अधिकतर प्रदूषण की चपेट में आ जाते हैं उन्हें आंख, चमड़ी और श्वास की बीमारियां हो जाती हैं। बच्चे तो इन बीमारियों से सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। इन्हें श्वास की बीमारी हो जाती है। उनके व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है क्योंकि उनके फेफड़ों पर रासायनिक तडव का अपेक्षाकृत अधिक दबाव पड़ता है। इस दस्तावेज में एक चिंताजनक उल्लेख यह है कि अगर यह स्थिति जारी रही तो दो हजार ईस्वी तक हमारे बच्चों को एंटीबायोटिक की बड़ी मात्रा अथवा दमा रोगी दवाओं पर निर्भर रहना पड़ेगा। सीसे के धुएं से मस्तिष्क की बीमारी और उच्च रक्तचाप का रोग हो सकता है तथा गुर्दे काम करना बंद कर सकते हैं। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए जो कि दरअसल बहुत चिंताजनक हैं मेरा पर्यावरण एवं वन मंत्री महोदय और भूतल परिवहन मंत्री जी से निवेदन है कि उक्त तथ्यों की जांच करें और अहमदाबाद के नागरिकों को धीरे-धीरे असर करने वाले इस जहर के विनाशकारी प्रभाव से बचायें।

श्रीमती उर्मिला बेन चिमनभाई पटेल (गुजरात) : मैं इनके साथ हूं।

Wrong asnouncement by oordarshan about the result of Shri Mulayam Singh Yadav's Election

श्री राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं सदन का और सरकार का ध्यान आपके दूरदर्शन की अपराधिक लापरवाही की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं। 28 नवम्बर को 12 बजे जब पूरे उत्तर प्रदेश में चुनाव की मतगणना चल रही थी उस वक्त दूरदर्शन का कार्यक्रम जो राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत चुनाव विशलेषण का कार्यक्रम चल रहा था उसको बीच में रोक कर यह घोषणा की गई कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव अपने गृह निर्वाचन क्षेत्र जसवंत नगर से पराजित हो गये हैं। उस वक्त परिचर्चा में दो महत्वपूर्ण राजनेता हिस्सा ले रहे थे जिसमें बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांशी राम भी थे। उनसे प्रणव राय ने पूछा कि आप जिनको मुख्य मंत्री बनाने जा रहे हैं वह तो पराजित हो गये। जबकि स्थिति यह है कि मुलायम सिंह यादव उस वक्त जीत रहे थे। मैं इस मसले को एक साजिश इसलिए मानता हूं कि इसका बहुत महत्वपूर्ण गम्भीर परिणाम यह हुआ कि मुलायम सिंह जी के प्रति आस्थावन कार्यकर्ता जो मतगणना केन्द्रों पर थे, मतगणना एजेंट के रूप में काम कर रहे थे समूचे उत्तर प्रदेश में उन पर इतना जबर्दस्त असर पड़ा कि तमाम लोग मतगणना केन्द्रों से बाहर आ गये। नतीजा यह हुआ कि हमारे कम से कम 20 उम्मीदवार चुनाव हार गये। मतगणना के दौरान उनको पराजित कर दिया गया। बदायूं में इस तरह का मामला हुआ। लखीमपुर खीरी में मुजफ्फर अली साहब को हरा दिया गया। ऐसे दर्जनों केसेज हुए जहां लोग बाहर आ गये। दूसरे, जैसे ही एक खबर टेलीविजन से प्रसारित हुई तो कुछ लोग जिन्हें मुलायम सिंह के नाम से चिढ़ ... है। जिसमें भारतीय जनता पार्टी और आर.एस.एस. के लोग हैं, कई जगह नारे लगाते हुए सड़कों पर आ गये और कई जगह मुहल्लों और शहरों में जहां पर माइनोरिटीज के लोग रहते हैं, उन पर आक्रामक मुद्रा में हरकतें की गईं। इसलिए कई जगहों पर उत्तर प्रदेश में तनाव की स्थिति पैदा हुई। अगर दो तीन घंटे के अन्दर कंट्रडिशन टेलीविजन से न आया होता तो उत्तर प्रदेश के कई शहरों में दंगों की स्थिति हो सकती थी। यह आपराधिक लापरवाही टेलीविजन की थी। मैं आपके माध्यम से सरकार